अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट (रजि.)

जैसा कि आप सभी जानते और मानते हैं कि हमारा जातीय उत्पत्ति स्थल राजस्थान के खण्डेला ग्राम के निकट स्थित लोहारगल धाम है, लेकिन हम में से कई यह नहीं जानते कि यह स्थल (लोहारगल) है कहाँ और इसका क्या महत्व है।

जैसा कि हम सामाजिक ग्रंथों में पढ़ते आ रहे हैं कि भगवान शिव और माँ पार्वती के वरदान और आशीर्वाद से क्षत्रिय वर्ण त्यागकर वैश्य वर्ण प्राप्त करके माहेश्वरी कहलाये और सम्पूर्ण भारतवर्ष में फैलकर लेखनी (कलम) व तराजू के माध्यम से परिवार का भरण-पोषण आरम्भ किया।

हमारी सामाजिक उत्पत्ति की कथा में लोहारगलधाम का अनन्य स्थान है, अतः लोहारगल के सम्बन्ध में संक्षिप्त जानकारी सविनय प्रस्तुत है--

लोहारगल राजस्थान के झुंझनु जिले की नवलगढ़ तहसील में आता है, जो सीकर से २५ कि.मी., खाटू श्याम जी से ४६ कि.मी., सालासर बालाजी से ८० कि.मी. की दूरी पर है। लोहारगल के लिये जयपुर से पलसाना, खण्डेला, उदयपुरवादी होकर या सीकर से नीमकाथाना जाने वाले मार्ग पर २५ कि.मी की दूरी पर अन्दर की ओर ४ कि.मी. पर जाना पड़ता है।

लोहारगल शंखनुमा पहाड़ियों के मध्य स्थित है, जहाँ भव्य और आकर्षक सूर्यकुण्ड में गौमुख से पवित्र और निर्मल जल अविरत गिरता रहता है। सूर्यकुण्ड के जल में स्नान करने से गम्भीर बीमारियों का अन्त होता है एवं यदि यहाँ के जल को दस दिनों तक किसी बर्तन में रखकर उसमें लोहे का टुकड़ा डाल दिया जाये तो वह गल जाता है एवं मानव अस्थि मात्र तीन दिनों में गल जाती है। यही कारण है कि लोहारगल के आस-पास के बन्धु हरिद्वार या अन्य स्थानों के बजाय अन्तिम क्रिया हेतु लोहारगल ही जाते हैं।

आपने माँ दुर्गा जी की आरती में पढ़ा होगा ''श्रीमाल केतु में राजत''। यह पहाड़ ही श्रीमाल केतु पर्वत है और यहीं पर श्रीमाल केतु भगवान का मंदिर है, मंदिर हेतु सूर्यकुण्ड के समीप से पहुँचने का मार्ग है।

माँ दुर्गा के शक्तिपीठों में एक शक्तिपीठ शाकम्भरी देवी का भी है, यह शक्तिपीठ भी श्रीमाल केतु भगवान के मंदिर के पीछे की ओर ही है।

लोहारगल में सूर्यकुण्ड के समीप नीलवर्ण महादेव जी का मंदिर है जिसका निर्माण राजा खडगलसेन द्वारा करवाया गया, जहाँ ७२ उमरावों की रानीयों ने तपस्या करके पाषण बने उमरावों की जीवन प्राप्ति हेतु भगवान से वरदान मांगा था, यह मन्दिर आज भी है। यहाँ जाने पर महादेव जी का जलाभिषेक किया जाता है।

हिन्दू धर्म में चार प्रमुख धामों बद्रीनाथजी, केदारनाथजी, जगन्नाथजी और द्वारिकाजी की मान्यता है। उसकी प्रकार माहेश्वरी समाज के बन्धुओं के लिए चार धामों के अतिरिक्त पाँचवा धाम लोहारगल धाम है।

माहेश्वरी समाज के बन्धु महत्व व जानकारी के अभाव में वर्ष में लगभग ५०० बंधु ही यहाँ पहुँच पाते हैं जबकि अन्य समाज के लगभग २० लाख बन्धु प्रतिवर्ष लोहारगल तीर्थ पहुँचकर दर्शन लाभ करते हैं।

माहेश्वरी समाज के बन्धु अधिकाधिक संख्या में प्राचीनतम् लोहारगलधाम पहुँचकर दर्शन का लाभ लें, इस हेतु अ.भा. माहेश्वरी युवा संगठन के माध्यम से एक ट्रस्ट का निर्माण किया गया जिसके माध्यम से अधिकाधिक प्रचार-प्रसार और लोहारगलधाम पहुँचने पर वहाँ ठहरने हेतु भवन निर्माण का संकल्प लिया गया है एवं लोहारगल धाम में लगभग ६०००० स्क्वायर फीट जमीन क्रय की गई।

प्रस्तावित

सर्वसुविधायुक्त अत्याधुनिक भवन का निर्माण।
२४ कमरों का निर्माण फर्नीचर सहित।
एक बड़ा सत्संग हॉल, एक छोटा हॉल एवं भोजशाला का निर्माण
वर्तमान में प्रचलित वंशोत्पत्ति चित्र अनुरूप सुन्दर एवं भव्य मन्दिर का निर्माण किया जाना है।
माहेश्वरी समाज की समस्त खापों की कुलदेवियों के स्वरूप की स्थापना।

लोहारगल धाम स्थान पर बनने वाले भवन एवं मंदिर में एक ईंट आपकी ओर से भी जोड़ी जावे, इस हेतु १००/- रूपये का एक कूपन अवश्य प्राप्त करें। आपसे विनम्र आग्रह है कि एक से अधिक कूपन प्राप्त कर अधिकाधिक सहयोग प्रदान करें।

वर्तमान स्थिति

ट्रस्ट द्वारा लोहारगल में भवन निर्माण हेतु भूमि पूजन २८ अगस्त २००६ को किया गया। इसके पश्चात् निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ। परन्तु प्रारम्भ के दिनों में कुछ प्रशासनिक एवं स्थानीय अड़चनों के कारण निर्माण कार्य बाधित हुआा परन्तु सभी वैधानिकताओं को पूर्ण करने के पश्चात् निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ जो कि अनवरत चल रहा है। संगठन का लक्ष्य है कि वर्ष २०१२ में यह भवन एवं मन्दिर निर्माण समाज को समर्पित किया जाये। इस विशाल प्रकल्प हेतु अर्थ संग्रह कूपन युवा संगठन के प्रतिनिधियों द्वारा देशभर में समाज परिवारों तक पहुँचाये जा रहे हैं। ट्रस्ट के अध्यक्ष, मंत्री एवं अर्थ संग्रह समिति के अध्यक्ष तथा संगठन के अन्य पदाधिकारियों द्वारा नागपुर सूरत, हैदराबाद, रायचुर, चेन्नई, जयपुर, गुवाहाटी, जोरहाट आदि स्थानों पर माहेश्वरी समाज के बड़े दानदाताओं से सम्पर्क किया गया और सभी स्थानों पर आशानुरूप सहयोग एवं समर्थन प्राप्त हुआ।

ट्रस्ट बोर्ड

अध्यक्ष	–	श्री रमेश जी तापड़िया, काठमाण्डु
महामंत्री	–	श्री अशोक जी ईनानी, इन्दौर
उपाध्यक्ष	–	श्री सुशील जी कालानी, जोरहाट
सहमंत्री	–	श्री संजीव जी चाण्डक, वाराणसी
कोषाध्यक्ष	–	श्री नंदकिशोर जी मालान, पुणे
भवन निर्माण समिति अध्यक्ष	–	श्री प्रदीप जी बाहेती, जयपुर
भवन निर्माण समिति मंत्री	–	श्री राजकुमार जी धूत, सीकर
भवन निर्माण समिति सह-मंत्री	–	श्री राजकुमार जी काल्या, गुलाबपुरा
अर्थ संग्रह समिति अध्यक्ष	–	श्री श्याम सुन्दर जी सोनी, नागपुर
अर्थ संग्रह समिति मंत्री	–	श्री रमेश जी बंग, हैदराबाद
अर्थ संग्रह समिति सहमंत्री	–	श्री श्रीभगवान जी मूंदड़ा, अलीपुरद्वारा
अर्थ संग्रह समिति सहमंत्री	–	श्री नवल किशोर मूँदड़ा, फरीदाबाद
अर्थ संग्रह समिति सहमंत्री	–	श्री श्याम सुन्दर जी बिड़ला, मेड़ता
अर्थ संग्रह समिति सहमंत्री	–	श्री प्रदीप जी धूत-लातूर
प्रचार-प्रसार समिति अध्यक्ष	–	श्री राजेन्द्र जी काबरा, दिल्ली
प्रचार-प्रसार समिति मंत्री	–	श्री नारायण जी मालपानी, मुम्बई
प्रचार-प्रसार समिति सहमंत्री	–	श्री कमल जी भूतड़ा, सूरत